पत्र सूचना शाखा
(मुख्यमंत्री सूचना परिसर)
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0

मुख्यमंत्री ने भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष समारोह का शुभारम्भ किया

भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय की 100 वर्षों की विकास यात्रा पर आधारित कॉफी टेबल बुक तथा डाक विभाग के विशेष आवरण एवं विरोपण का विमोचन किया

मुख्यमंत्री ने 'श्रुति से शताब्दी तक विश्वविद्यालय की 100 वर्षों की यात्रा' पर आधारित प्रदर्शनी का अवलोकन तथा उत्कृष्ट योगदान देने वाले पूर्व छात्र–छात्राओं को सम्मानित किया

भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय का शताब्दी वर्ष महोत्सव का शुभारम्भ केवल एक औपचारिकता नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक चेतना, साधना और राष्ट्र बोध का क्षण : मुख्यमंत्री

भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय ने पीढ़ी दर पीढ़ी भारत की सांस्कृतिक चेतना तथा उसके स्वर, लय एवं संस्कार को नई पहचान प्रदान की

प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा व मार्गदर्शन में विरासत और जड़ों को ढूंढने का प्रयास देश में पुनः प्रारम्भ हुआ, वैश्विक स्तर पर भारत को नई पहचान मिल रही

कला व संगीत के क्षेत्र में पं0 विष्णु नारायण भातखण्डे का योगदान स्मरणीय, उन्होंने भारतीय संगीत को वैज्ञानिक आधार, शास्त्रीय अनुशासन और सुव्यवस्थित पाठ्यक्रम प्रदान किया

कलाकार ईश्वरीय गुण से युक्त होता, कलाकार चाहे किसी भी विधा से जुड़ा हो, उसका सम्मान तथा प्रोत्साहित करना चाहिए

राज्य सरकार कलाकारों को सुरक्षित, सम्मानित, सशक्त वातावरण तथा उचित प्लेटफॉर्म प्रदान करने के लिए कृतसंकल्पित, कलाकारों के कल्याण, स्वास्थ्य, प्रशिक्षण, मंच और आजीविका से जुड़े विषय हमारी नीतियों के केन्द्र

प्रदेश सरकार ने गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर की कल्पना और पं0 विष्णु नारायण भातखण्डे की भावनाओं के अनुरूप वर्ष 2022 में भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय के रूप में मान्यता प्रदान की, यह प्रदेश का पहला संस्कृति विश्वविद्यालय

संस्कृति की पहचान तथा कला के धाम को संरक्षित करने के दृष्टिगत आजमगढ़ के हरिहरपुर गांव में एक संगीत महाविद्यालय की स्थापना की गयी

प्रदेश सरकार ने लखनऊ के काकराबाद में लगभग 06 एकड़ भूमि विश्वविद्यालय को प्रदान की, जहाँ विश्वविद्यालय के नवीन भवन की स्थापना होगी

लखनऊ : 18 दिसम्बर, 2025

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने कहा कि भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय ने अपनी 100 वर्षों की यात्रा में भारतीय संगीत, नृत्य, नाट्य और ललित कलाओं को न केवल संरक्षित किया है, बल्कि राष्ट्र निर्माण में आधुनिक शैक्षणिक

व्यवस्था से प्रतिष्ठित कर संस्कृति कर्मी के रूप में अहम भूमिका का निर्वहन करने का प्रयास किया है। इसने पीढ़ी दर पीढ़ी भारत की सांस्कृतिक चेतना तथा उसके स्वर, लय एवं संस्कार को नई पहचान प्रदान की है। भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय का शताब्दी वर्ष महोत्सव का शुभारम्भ केवल एक औपचारिकता नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक चेतना, साधना और राष्ट्र बोध का क्षण है। भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय अपनी एक नई पहचान बना कर नई ऊँचाई प्राप्त कर रहा है।

मुख्यमंत्री जी आज यहाँ भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष समारोह का शुभारम्भ करने के पश्चात अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। इसके पूर्व, मुख्यमंत्री जी ने पं0 विष्णु नारायण भातखण्डे की प्रतिमा पर श्रद्धासुमन अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। उन्होंने भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय की 100 वर्षों की विकास यात्रा पर आधारित कॉफी टेबल बुक 'ए लिगेसी ऑफ एक्सीलेन्स' तथा डाक विभाग के माध्यम से तैयार विशेष आवरण एवं विरोपण का विमोचन किया। उन्होंने 'श्रुति से शताब्दी तक विश्वविद्यालय की 100 वर्षों की यात्रा' पर आधारित प्रदर्शनी का अवलोकन तथा उत्कृष्ट योगदान देने वाले पूर्व छात्र–छात्राओं डॉ0 पूर्णिमा पाण्डेय, विदुषी दिलराज कौर, श्रीमती मालिनी अवस्थी तथा श्री केवल कुमार को सम्मानित किया।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि किसी भी मनुष्य की आत्मा जब शरीर से अपना सम्बन्ध तोड़ देती है, तो शरीर निस्तेज अर्थात् मृत हो जाता है। इसी प्रकार राष्ट्र की आत्मा उसकी संस्कृति होती है। यदि संस्कृति को राष्ट्र से अलग कर दिया जाए, तो वह निस्तेज हो जाता है। राष्ट्र अपनी पहचान को खो देता है। भारत की कला, स्वर एवं लय ने अपनी पहचान को सम और विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए निरन्तरता प्रदान की है। भारत की संस्कृति ने इन संस्कारों की बदौलत विभिन्न विधाओं के माध्यम से स्वयं को विश्व में सनातन संस्कृति के रूप में स्थापित करने तथा प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाने में सफल हुई है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि वर्ष 1940 में गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर ने एक पत्र जारी किया था, जिसमें इस संस्थान को विश्वविद्यालय के रूप में सम्बोधित किया था। वर्ष 1947 में भारत आजाद हुआ, वर्ष 1950 में भारत का संविधान लागू हुआ। वर्ष 1947 से लेकर वर्ष 2017 तक कई सरकारें आती–जाती रही, लेकिन तत्कालीन राज्यपाल श्री राम नाईक जी को धन्यवाद देना चाहूँगा, जिन्होंने एक मुलाकात के दौरान भातखण्डे संगीत संस्थान को विश्वविद्यालय बनाने की इच्छा जतायी थी। प्रदेश सरकार ने गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर की कल्पना और पं0 विष्णु नारायण भातखण्डे की भावनाओं के अनुरूप विश्वविद्यालय के प्रस्ताव को आगे बढ़ाते हुए वर्ष 2022 में इसे विश्वविद्यालय के रूप में

मान्यता प्रदान की। भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय प्रदेश का पहला संस्कृति विश्वविद्यालय है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि कलाकार ईश्वरीय गुण से युक्त होता है। कलाकार चाहे किसी भी विधा से जुड़ा हो, उसका सम्मान होना चाहिए तथा उसे प्रोत्साहित करने का प्रयास होना चाहिए। विश्वविद्यालय के माध्यम से पूर्व छात्रों तथा कलाकारों को सम्मानित किया जा रहा है। यह कलाकार विश्वद्यिालय की परम्परा को देश प्रदेश व विश्व में पहचान व सम्मान दिला रहे है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि किसी भी विश्वविद्यालय का 'कुलगीत' तथा 'लोगो' उसकी पहचान होता है। भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय की थीम 'नादाधीनं जगत्' अर्थात् नाद के अधीन पूरा जगत है। इस जगत का पहला स्वर ओंकार है। नाद एक योग होता है, जिसमें अपने कानों को बन्द करके अंदर के स्वर को सुनने का प्रयास किया जाए, तो नाद की तरह वह गुंजायमान होगा। यह जीवन की सच्चाई है। विज्ञान, अध्यात्म एवं संस्कृति भी यही कहती है। इस नाद को पहचानना संगीत की अलग–अलग विधाओं द्वारा की जाने वाली साधना है। स्वर, लय, नाट्य व अन्य विधाएँ उस साधना की प्रस्तुति करती हैं।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि कला व संगीत के क्षेत्र में पं0 विष्णु नारायण भातखण्डे का योगदान स्मरणीय है। वर्ष 1926 में देश गुलाम तथा औपनिवेशिक दमन का शिकार था। उस कालखण्ड में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं थी। संगीत व कला के लिए कोई मंच उपलब्ध नहीं था। पं0 विष्णु नारायण भातखण्डे ने भारतीय संगीत को वैज्ञानिक आधार दिया। शास्त्रीय अनुशासन और सुव्यवस्थित पाठ्यक्रम प्रदान किया। राग–ताल वर्गीकरण, क्रमिक पद्धति और गुरु–शिष्य परम्परा को आधुनिक शिक्षा से जोड़ने का अभिनव कार्य किया। यह केवल एक शैक्षणिक प्रयोग नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति को आत्मसम्मान, आत्मगौरव और स्थायित्व देने का ऐतिहासिक प्रयास था। भातखण्डे संगीत संस्थान उसका आधार बना था।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की प्रेरणा व मार्गदर्शन में विरासत और जड़ों को ढूंढने का प्रयास देश में पुनः प्रारम्भ हुआ है। वैश्विक स्तर पर भारत को नई पहचान मिल रही है। वर्ष 2019 में हजारों वर्षों की विरासत कुम्भ तथा वर्ष 2025 में महाकुम्भ का आयोजन प्रयागराज की धरती पर हुआ। सम्पूर्ण देश को इस आयोजन के साथ जोड़ने तथा यूनेस्को द्वारा 'मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर' के रूप में मान्यता देने के कार्यक्रम को आगे बढ़ाया गया। यह मान्यता थी कि आज का युवा अपनी संस्कृति से विमुख हो रहा है, लेकिन प्रयागराज महाकुम्भ–2025 में शामिल

हुए 66 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं में सर्वाधिक संख्या युवाओं की थी। भारत तथा दुनिया के प्रत्येक कोने से युवा इस आयोजन के साथ जुड़ने के लिए उत्सुक था।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि श्रीमती सोनल मान सिंह ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि जब हम नृत्य करते हैं, तो नटराज के रूप में भगवान शिव हमें दिखाई देते हैं। जब वीणा में अपने स्वरों को लय देते हैं, तो साक्षात माता सरस्वती हमारे समक्ष होती हैं। जब किसी नाटक में संवाद करते हैं, तो प्रभु श्रीराम की मर्यादा हमारे समक्ष देखने को मिलती है। जब किसी रस में डूबे होते हैं, तो भगवान श्रीकृष्ण की रसधारा जुड़ती हुई दिखाई देती है। यह सभी उत्तर प्रदेश में मौजूद है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि राज्य सरकार कलाकारों को सुरक्षित, सम्मानित, सशक्त वातावरण तथा उचित प्लेटफॉर्म प्रदान करने के लिए कृतसंकल्पित है। कलाकारों के कल्याण, स्वास्थ्य, प्रशिक्षण, मंच और आजीविका से जुड़े विषय हमारी नीतियों के केन्द्र में हैं। भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय इस दिशा में राज्य सरकार के साथ बेहतरीन साझेदार के रूप में कार्य कर रहा है। हमारी परम्परा को आधुनिकता से जोड़कर नई पीढ़ी के माध्यम से आगे बढ़ा रहा है। यहां से प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके विद्यार्थी भारत की शास्त्रीय, वैदिक तथा सनातन परम्परा को वैश्विक पहचान देने का कार्य करेंगे।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि प्रदेश सरकार ने संस्कृति की पहचान तथा कला के धाम को संरक्षित करने के दृष्टिगत जनपद आजमगढ़ के हरिहरपुर गांव में एक संगीत महाविद्यालय की स्थापना की है। भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय से एफिलिएटेड कॉलजों के माध्यम से अधिक से अधिक छात्रों को मंच मिलेगा। प्रदेश के महाविद्यालयों में कल्चरल क्लब योजना से सांस्कृतिक चेतना का विस्तार करना है। डिजिटल दस्तावेजीकरण, अन्तरराष्ट्रीय सांस्कृतिक सहयोग और वैश्विक मंचों पर भारतीय कला की सशक्त उपस्थिति–इन सभी क्षेत्रों में भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि भातखण्डे संगीत संस्थान वर्ष 1926 में एक छोटा सा केन्द्र था। उस समय की आवश्यकतानुसार उपलब्ध सुविधाएँ पर्याप्त थी, किन्तु आज के लिए यह कम है। प्रदेश सरकार ने लखनऊ के काकराबाद में लगभग 06 एकड़ भूमि विश्वविद्यालय को प्रदान की है, जहाँ विश्वविद्यालय के नवीन भवन की स्थापना होगी। विश्वविद्यालय के साथ पर्यटन और संस्कृति विभाग यह सुनिश्चित करे कि जो भी निर्माण कार्य हो, वह वैश्विक अर्थात् ग्लोबल स्टैण्डर्ड का होना चाहिए। वैश्विक मानकों के अनुरूप आधुनिक तथा समग्र सुविधाएँ एक परिसर में ही उपलब्ध हो। शिक्षा, शोध, साधना तथा सांस्कृतिक प्रस्तुति के दृष्टिगत बेहतर कार्य होना चाहिए।

परिसर में कम से कम दो ऑडिटोरियम होने चाहिए। एक छोटा ऑडिटोरियम 200 से 250 की प्रस्तुति के लिए और एक बड़ा ऑडिटोरियम 1,000 से 1,500 बच्चों के कार्यक्रम तथा प्रस्तुति के लिए होना चाहिए। परिसर में ओपन थिएटर होना चाहिए, जहाँ बच्चे अपनी प्रस्तुति दे सकें। अच्छी सुविधाओं से युक्त लाइब्रेरी होनी चाहिए, जहाँ वर्तमान तक की धरोहर को व्यवस्थित रूप से संरक्षित किया जा सके। भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय के इस पुराने परिसर को हटाना नहीं है, बल्कि इस परिसर को संगीत व उससे जुड़ी विभिन्न विधाओं के बेहतरीन म्यूजियम के रूप में आगे बढ़ाया जाए। स्थापना काल से लेकर अब तक के संस्थापकों, डायरेक्टर, शिक्षक, मेधावी छात्र के आंकड़ों को एकत्र करके उसे प्रदर्शित किया जाए।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि शताब्दी वर्ष समारोह के अन्तर्गत एक वर्ष में विश्वविद्यालय के साथ–साथ संस्कृति और पर्यटन विभाग द्वारा विश्वविद्यालय के पुरातन छात्रों की अलग–अलग दिनों में 100 प्रस्तुतियों के लिए तैयारी की जानी चाहिए। अच्छे कलाकारों ने जो प्रस्तुतियाँ देश में प्रस्तुत की हैं, उन्हें अलग–अलग दिनों में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। इससे यहाँ के छात्रों को विभिन्न विधाओं को सीखने का अवसर प्राप्त होगा। इन कार्यक्रमों का डॉक्यूमेण्टेशन कर सुरक्षित रखें तथा आगे बढ़ाएँ। विश्वविद्यालय आज की आवश्यकता के अनुरूप प्रधानमंत्री जी के विजन विकसित भारत की संकल्पना को साकार करने की दिशा में कदम उठाए, जिससे कला, संगीत, नाट्य और अन्य सभी परम्पराओं में वैश्विक पहचान मिल सके।

मुख्यमंत्री जी को अवगत कराया गया कि भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय में शास्त्रीय संगीत की तीनों विधाओं गायन, वादन और नृत्य के सर्टिफिकेट से लेकर शोध तक की समन्वित शिक्षा प्रदान की जा रही है। डिप्लोमा और स्नातक पाठ्यक्रम में नाट्यकला एवं चित्रकला सम्मिलित है।

कार्यक्रम को पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्री जयवीर सिंह, भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो0 मांडवी सिंह तथा पूर्व सांसद व पद्म विभूषण से सम्मानित श्रीमती सोनल मान सिंह ने भी सम्बोधित किया।

————————

PN-CM-Bhatkhande Sanskriti University Centenary Celebration-18 December, 2025